तुमने सुना है कि यह कहा गया था: हत्या मत करो

मत्ती ५:२१-२६

खोदाई: फ़रीसी यहूदी धर्म ने टोरा के साथ क्या किया? क्यों? यहाँ यीशु को "नए मूसा" के रूप में कैसे देखा जाता है? मसीहा सही और ग़लत का कौन सा नया मानक बना रहा है? वह क्रोध और हत्या को कैसे जोड़ता है? क्यों? फरीसियों ने यह क्यों सोचा कि वे धर्मी हैं? हमारे उद्धारकर्ता के कथन अनुचित क्रोध को पालने और उस पर कार्य करने की गंभीरता को कैसे रेखांकित करते हैं? वह यहाँ किन आंतरिक मनोवृत्तियों पर बल देता है?

प्रतिबिंबित करें: आप उच्च, पवित्र, उत्तम मानक पर रखे जाने के बारे में कैसा महसूस करते हैं? आप संभवतः उस मानक को कैसे पूरा कर सकते हैं? यह कैसी खबर है? आपको कब शब्बत के दिन चालान में हिस्सा लेना स्थगित करना पड़ा है क्योंकि किसी भाई या बहन के मन में आपके खिलाफ कुछ था, और आपको सबसे पहले उनके पास जाकर मेल-मिलाप करना पड़ा? क्या ऐसा करने से आपको बेहतर महसूस हुआ? क्यों? क्यों नहीं? आपके विश्वास के बारे में कौन सी बाहरी चीज़ें आपको अच्छा महसूस कराती हैं? किसी बाहरी पालन के बारे में अच्छा महसूस करने और यह सोचने के बीच क्या अंतर है कि यह आपको धार्मिक बनाता है?

टोरा के सही व्याख्याकार के रूप में, **येशुआ** अब बाइबिल के समय के साथ-साथ आज भी रहने वाले लोगों के सामने आने वाले कई नैतिक मुद्दों को संबोधित करते हैं। निःसंदेह लिखित टोरा हमेशा के लिए **परमेश्वर** के वचन के रूप में स्थापित है। लेकिन टोरा से व्यावहारिक अनुप्रयोग प्राप्त करने की प्रक्रिया को "वॉक" कहा जाता है, जिसका अर्थ है हलाखाह। **येशुआ** अब **अपने** दिन के विभिन्न हलाखिक परिप्रेक्ष्यों पर **अपनी** व्याख्या देता है।

पहाड़ी उपदेश में हम आगे जो देखते हैं वह फरीसी यहूदी धर्म के विपरीत येशुआ की सच्ची धार्मिकता की व्याख्या के सोलह उदाहरण हैं, जिसने टोरा के एडोनाई के मूल इरादे को विकृत कर दिया था। उन्होंने कुछ ऐसी चीज़ ले ली जो धार्मिक और पवित्र थी और उसे ऐसी चीज़ में बदल दिया जो उनके पाप और दुष्टता को उचित ठहरा सकती थी। उन्होंने कुछ ऐसा लिया जिसे हासिल करना जानबूझकर असंभव था (मूसा की ६१३ आज्ञाओं को ध्यान में रखते हुए), और इसे कुछ ऐसे रूप में विकृत कर दिया जो वे धर्मी दिखने के लिए कर सकते थे (देखे **Ei - द ओरल लॉ देखें**)। इस खंड में **मसीह** टोरा से कई आज्ञाओं को चुनते हैं और धार्मिकता की फरीसी व्याख्या और धार्मिकता की उनकी व्याख्या के बीच एक अंतर बनाते हैं। बाहरी अनुपालन और आंतरिक प्रेरणा के बीच विरोधाभास हर जगह देखा जाता है। **पाखण्डी रब्बी** हृदय की ओर देख रहा था।

सच्ची धार्मिकता के अपने पहले उदाहरण में, **मसीहा** ने आत्म-धार्मिकता के भ्रम को तोड़ दिया। पूरे इतिहास में अधिकांश लोगों की तरह, फरीसियों और टोरा-शिक्षकों ने सोचा कि यदि कोई पाप था जिसके लिए वे स्पष्ट रूप से दोषी नहीं थे - तो वह **हत्या थी**। उन्होंने और कुछ भी किया हो, कम से

कम उन्होंने **हत्या** तो कभी नहीं की थी। येशुआ ने अपनी शिक्षा इस प्रकार शुरू की: **आपने सुना है कि यह बहुत पहले मेरे सेवक मूसा के माध्यम से लोगों से कहा गया था: आप हत्या नहीं करेंगे** (मैं दृढ़ता से सुझाव देता हूं कि आप निर्गमन **Dp** पर मेरी टिप्पणी पढ़ें - छठी आज्ञा: हत्या न करें), **और जो कोई हत्या करेगा वह न्याय के योग्य होगा (मत्ती ५:२१)**। फिर भी, जब हम **यीशु** के शब्दों को करीब से देखते हैं तो हम देख सकते हैं कि वह केवल लिखित टोरा पर ही टिप्पणी नहीं कर रहे थे, **बल्कि बड़ों की परंपरा (मत्ती १५:२; मरकुस ७;५),** या मौखिक कानून पर भी टिप्पणी कर रहे थे। फरीसियों ने कहा कि लोग तब तक **हत्या** के दोषी नहीं थे जब तक उन्होंने वास्तव में किसी की हत्या नहीं की। उन्होंने इस आदेश को केवल बाहरी चीज़ तक सीमित कर दिया। जब तक आप लोगों को नहीं मार रहे थे, तब तक आप किसी भी गलत काम के लिए निर्दोष थे। आदेश के अक्षर और आदेश की भावना के बीच अंतर है।

लेकिन **मास्टर ने** मुद्दे की जड़ पर प्रहार किया जब उन्होंने कहा: **लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि जो कोई भी अपने भाई या बहन से नाराज है** (**भाई या बहन** के लिए ग्रीक शब्द (एडेलफोस) यहां एक साथी शिष्य को संदर्भित करता है, चाहे वह आदमी हो या पुरुष महिला; **मत्ती ५:२३** में भी) **न्याय के अधीन होगी। यीशु** ने कहा कि कार्य करने से पहले ही धार्मिकता को तोड़ा जा सकता है। केवल हत्या न करने के मिट्ज्वा को पूरा करना ही पर्याप्त नहीं था, बल्कि हमें अपने **भाई या बहन पर भी क्रोध** न करने के उच्च मानक के लिए बुलाया गया है। राज्य के सिद्धांत बाहरी आज्ञाकारिता से परे हृदय की प्रेरणाओं और विचारों तक जाते हैं।

निःसंदेह **हत्या** के कृत्य के बीज अधर्मी मनोभावों में हैं। शत्रुता कार्रवाई से पहले होती है. किसी की भाषा हृदय के भावों को प्रकट कर सकती है, और अक्सर करती भी है। फिर **यीशु** ने अपनी शिक्षा जारी रखी जब उन्होंने कहा: **फिर, जो कोई भी अपने भाई या बहन से कहता है, "तुम निकम्मे हो" उसे महासभा के सामने लाया जाएगा (देखे Lg - महान महासभा** देखें)। **और जो कोई कहता है, "हे मूर्ख," वह हिन्नोम की तराई की आग में जलने का दण्ड पाता है (मैथ्यू ५:२३)! "आप किसी काम के लिए नहीं" का पूर्व शब्द (हिब्रू रेक) का उपयोग तल्मूडिक साहित्य में एक अपमान के रूप में किया जाता है जिसका अर्थ खाली या खाली सिर होता है। उत्तरार्द्ध,** "तुम मूर्ख" **(हिब्रू ईविल) का बुराई का अधिक मजबूत अर्थ है।** अत: इस आदेश की धार्मिकता पहले ही आंतरिक रूप से टूट चुकी थी।

हिन्नोम की घाटी (एक व्यक्तिगत नाम) तब और अब दोनों जगह यरूशलेम के पुराने शहर के ठीक दक्षिण में स्थित है। वहाँ कूड़े की आग सदैव जलती रहती थी; इसलिए इसका उपयोग नरक के रूपक के रूप में किया जाता है अधर्मियों के लिए दण्ड की अग्नि जलाना, जैसा कि **यशायाह ६६:२४** में सिखाया गया है। तानाख में अन्यत्र, **व्यवस्थाविवरण ३२:२२** एक जलते हुए नरक के बारे में बात करता है; **दूसरा शमूएल २२:६, भजन 18:5 और भजन ११६:३** दिखाते हैं कि **नरक** एक दुःखदायी स्थान है; **भजन ९:१७** कहता है कि दुष्ट **नरक** में जाते हैं; और **अय्यूब २६:६** दिखाता है कि **नरक** विनाश का स्थान है। इन सभी छंदों में हिब्रू शब्द **शोल** है। यह आमतौर पर ग्रीक शब्द **हेडीस** से मेल खाता है। इस प्रकार, **नरक** ब्रित चादाशाह के लिए अद्वितीय नहीं है।

निस्संदेह, **यीशु** के कथन अनुचित क्रोध को पालने और उस पर कार्य करने की गंभीरता को रेखांकित करते हैं। **इसलिए**, **मसीहा अपने** श्रोताओं को अनुचित क्रोध के कुछ ठोस उदाहरणों के बिना नहीं छोड़ता। सबसे पहले, **यदि आप अपना उपहार वेदी पर चढ़ा रहे हैं और वहां आपको याद है कि आपके भाई या बहन के मन में आपके खिलाफ कुछ है, तो अपना उपहार वहीं वेदी के सामने छोड़ दें।** जब तक आंतरिक पाप है, तब तक पूजा के बाहरी कार्य **इश्वर** को स्वीकार्य नहीं हैं। **पहिले जाकर उन से मेल मिलाप कर; तो आओ और अपनी भेंट चढ़ाओ (मत्ती ५:२३-२४)। मिश्नाह में कहा गया है कि योम-किप्पुर (प्रायश्चित का दिन) किसी व्यक्ति के ईश्वर के विरुद्ध किए गए अपराधों के लिए प्रायश्चित करता है, लेकिन यह उसके साथी व्यक्ति के प्रति उसके अपराधों के लिए तब तक प्रायश्चित नहीं करता जब तक कि वह उसे संतुष्ट नहीं कर देता (योमा ८:९)**। **इश्वर** के लिए चढ़ावा जितना महत्वपूर्ण है, ऐसे बलिदान के पीछे की सच्ची भावना के लिए व्यक्ति को अपने नाराज **भाई या बहन** के साथ शांति स्थापित करने की आवश्यकता होती है। शालोम बहाल होने के बाद ही बलिदान दिया जा सकता है।

दूसरे, यदि आप किसी मुकदमे का शिकार बनते हैं तो भी यही सिद्धांत लागू होता है। **गैलीलियन रब्बी का निर्देश है कि अपने प्रतिद्वंद्वी के साथ मामलों को जल्दी से सुलझाएं जो आपको अदालत में ले जा रहा है। ऐसा तब करो जब तुम मार्ग में साथ हो, नहीं तो तुम्हारा विरोधी तुम्हें न्यायाधीश को सौंप देगा, और न्यायाधीश तुम्हें अधिकारी को सौंप देगा, और तुम्हें जेल में डाल दिया जाएगा। मैं तुम से सच कहता हूं, जब तक तुम आखिरी पाई भी न चुकता कर दो, तब तक तुम बाहर न निकलोगे। (मत्ती ५:२५-२६)** चूँकि अधर्मी क्रोध की कीमत बहुत अधिक है, इसलिए किसी भी नाराज पक्ष के साथ शांतिपूर्ण समाधान खोजना हर किसी के लिए फायदेमंद है।

निस्संदेह, पूर्ण अर्थ में, क्योंकि किसी का भी दूसरों के प्रति पूर्ण दृष्टिकोण नहीं होता है, कोई भी पूजा स्वीकार्य नहीं होती है। इस प्रकार **रब्बी** इस मार्ग में जो कुछ भी सिखाता है, जैसा कि पहाड़ी उपदेश के बाकी हिस्सों में, इश्वर की धार्मिकता के पूर्ण आदर्श मानक और **इश्वर** के अलावा हमारी अपनी शक्ति में उस मानक को पूरा करने के हमारे बिल्कुल असंभव कार्य को दिखाना है। **मसीह** हमें अपनी आरोपित धार्मिकता की ओर ले जाने के लिए हमारी आत्म-धार्मिकता को चकनाचूर कर देता है (जिसका अर्थ है कि **मसीहा** की सारी धार्मिकता जो हमारे आध्यात्मिक खाते में स्थानांतरित हो गई है), जो अकेले ही **एडोनिया** को स्वीकार्य है।

स्वर्गीय **पिता, पवित्र आत्मा** के कार्य के माध्यम से, मुझे दूसरों के प्रति मेरे क्रोध और नाराजगी को देखने की क्षमता दें। पिछले कुछ वर्षों में उन लोगों को याद करने में मेरी मदद करें जिन्हें मैंने माफ नहीं किया है, खासकर अपने रिश्तेदारों को। मैं मेल-मिलाप खोजने की इच्छा और साहस माँगता हूँ। मेरे अभिमान को पिघलाओ और अब और देर न करने में मेरी मदद करो। मैं **यीशु** के नाम पर यह प्रार्थना करता हूँ। आमीन.